एम०एड०-(2019-21)

Date 20/04/2020

दर्शन (भारतीय परिप्रेक्ष्य) में

दृश्यते अनेन इति दर्शन

दर्शन की उत्पत्ति ज्ञान के प्रति जिज्ञासा से हुआ

दर्शन - दृश धातु से बना है।

दृश्यते अनेन इति दर्शनम्

दृश - देखना

- देखते किससे है। → आँख से
- क्या देखते है। → ~~कुछ भी~~ भौतिकता
- क्यों देखते है → सुख के (इन्द्रियों)

सामान्य तरीके से

आँख का विषय है देखना
नाक का विषय है। गंध
इन्द्रियों के सुख के लिए देखना

योग के आठ नियम → यम, नियम, प्रत्याहार
आसन

प्रत्याहार - विपरीत आहार
आँख बाहर की देखती है। उसे अन्दर देखो

Page No.
Date : / /

दर्शन की परिभाषा →

बर्ट्रेण्ड रसल – "अन्य क्रियाओं के समान दर्शन का मुख्य उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति है।"

इकाई – 1

शैक्षिक अध्ययन –

A विद्या के संदर्भ में भारतीय दर्शन विचारधारा (सांख्य, योग, वेदान्त, बौद्ध, जैन) का योगदान तथा शैक्षिक लक्ष्य तथा वैध ज्ञानार्जन की विधियों के प्रति इस्लामी परम्परायें

B पाश्चात्य विचार धारायें आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद व्यवहारिकतावाद मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद का योगदान तथा सूचना ज्ञान और प्रज्ञान के विशेष संदर्भ में शिक्षा के उनका योगदान

C शिक्षा का समाजशास्त्र के प्रति उपागम शिक्षा व संस्कृति सामाजिक परिवर्तन के लिए शैक्षिक विचार

एम०एड०
(2019-21)

Date
22/04/2020

दर्शन = Philosophy

(जिज्ञासा- करना बिना नियम व तर्क के)

मानव में बुद्धि, चिन्तन शक्ति, कल्पना शक्ति, कार्य शक्ति विद्यमान होती है। जिससे वह संसार की उत्पत्ति नियामक शक्ति (ईश्वर और ब्रम्ह) चिन्तन व विचार करता है। यही दर्शन है।

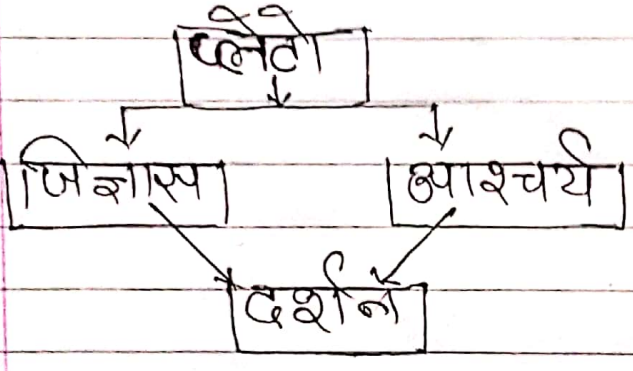

परिभाषा—

फिक्टे → "दर्शन ज्ञान का विज्ञान है।"

काण्ट → "दर्शन विज्ञान तथा ज्ञान की समीक्षा है"

प्लेटो — "सनातन, नियामक शक्तियों के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन"

काम्टे ⇒ दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है।

⇒ पाश्चात्य दर्शन बौद्धिक चिन्तन को और भारतीय दर्शन आध्यात्मिक चिन्तन को महत्व देता है।

Scanned with CamScanner

एम० एड० - (2019-21) दि०- 22/04/2020

Page No.
Date : / /

~दर्शन के कार्य~

(1) मनुष्य की जिज्ञासा को तृप्त करना
(2) सृष्टि के नियामक तत्व (ईश्वर तथा ब्रह्म) को उजागर करना।
(3) मनुष्य की आन्तरिक क्षमता का विकास करना।

—शिक्षा, दर्शन मे सम्बन्ध—

दर्शन विचार व सैद्धान्तिक है,
शिक्षा व्यवहार मूलक है।

दर्शन सिद्धान्त को प्रकट करता है। तो शिक्षा उसे व्यवहारिक व रूप देकर आगे अधिगम कर्ता तक पहुँचाती है।

रॉस महोदय — शिक्षा व दर्शन एक ही सिक्के के दो पहलू है।

एडम्स ⇒ शिक्षा दर्शन का गत्यात्मक पहलू है।

⇒ प्लेटो, सुकरात, जॉन लॉक, अरस्तू कमेनियस, रूसो, फ्रावेल, डी०वी० अरविन्दो, गाँधी, टैगोर

पहले दार्शनिक थे
बाद मे शिक्षा शास्त्री बने।

दि० 23/04/2020

एम०एड -(2019-21)

Page No.
Date: / /

भारतीय दर्शन की शाखाएँ

(1) सांख्य →

सांख्य दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल के अनुसार विश्व का प्रादुर्भाव प्राकृति प्रकृति और पुरुष के परस्पर समागम का प्रतिफल है। सांख्य दर्शन ईश्वर पर अत्यधिक बल न देकर व्यक्ति और विकास पर ध्यान केन्द्रित करता है। सांख्य दर्शन के अनुसार स्वभाव (प्रकृति) मूलत: तीन प्रकार के तत्वों से मिलकर बनी है। ये तत्व क्रमश: सत, रज, तम है। ⇒ सत का रंग श्वेत है तथा गुण सुख, ज्ञान और प्रकाश है। रज का रंग लाल तथा गुण कर्म व क्रिया यह एक चर तत्व है। तथा उत्प्रेरक का भी कार्य करता है। तम का रंग काला है। यह तत्व भारी व्यसनों से ढका हुआ तथा अज्ञानता का प्रतीक है। प्रत्येक मनुष्य का स्वभाव इन्हीं इन तीनों तत्वों के आनुपातिक सामन्जस्य से निर्मित होता है। जिन मनुष्यों मे सत का आनुपातिक अंश अधिक होता है व अन्य मनुष्यों की अपेक्षा अधिक सुखी, ज्ञानी, सदाचारी होते है।

Date 24/04/2020

यथार्थवाद (Realism)

जैसा कि नाम से स्पष्ट है। यह वह दर्शन का सिद्धान्त है। जिसके अनुसार वस्तुओं की सत्ता यथार्थ है। अर्थात् हम जो कुछ देखते है। अथवा अनुभव करते है। वही सत्य है। मनुष्य का ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभवो पर निर्भर करता है। यही यथार्थवादी भौतिक जड जगत को यथार्थ मानते है। ये वास्तविक व्यवहारिक और लौकिक जीवन को अधिक महत्व देता है।

यथार्थवाद वास्तविकता का विज्ञान इस विचारधारा के अनुसार सम्पूर्ण सत्ता निरन्तर अपना अस्तित्व रखती है। यह आवश्यक नही है कि हमे सम्पूर्ण सत्ता की प्रत्येक वस्तु पदार्थ या प्रत्यक्ष का ज्ञान हो वास्तव मे प्रत्येक वस्तु पदार्थ तथा प्रत्यय का स्वतन्त्र अस्तित्व होता है और इनके अस्तित्व को हमारे ज्ञान विचार से कोई सम्बन्ध नही है।

शिक्षा में यथार्थवाद → शिक्षा मे यथार्थवाद ने वस्तुओ के प्रयोग पर बल दिया क्योकि उनके अनुसार यह वस्तुओं की वास्तविकता एवं यथार्थ है। इन्ही को जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। ज्ञान का आधार है। शब्द नही वस्तु इनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जीवन की दैनिक व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

Page No.
Date : / /

यत पिन्डे तत ब्रम्हान्डे
जो हमारे अन्दर है वही बाहर है।
दर्शन - उसे समझना

देखना - अन्तर्दृष्टि से प्राप्त ज्ञान
क्या देखेंगे - अन्तिम सत्य को
क्यो देखेंगे मोक्ष के लिए देखेंगे -

भारती दर्शन की शुरुआत

Philo

अन्तर्दृष्टि से प्राप्त ज्ञान

आस्तिक	नास्तिक	ईश्वरवादी	अनिश्वरवादी
षट्दर्शन			
सांख्य	जैन	योग	जैन
योग	बौद्ध	न्याय	बौद्ध
न्याय	चार्वक	वैशेषिक	चारवाक
वैशेषिक		उत्तर मीमांसा	सांख्या
पूर्वमीमांसा			पूर्व मीमांसा
उत्तर मीमांसा (वेदान्त)			

Scanned with CamScanner

एम० एड० - (2019-21)
दि०- 22/04/2020

Page No.
Date : / /

~ दर्शन के कार्य ~

(1) मनुष्य की जिज्ञासा को तृप्त करना
(2) प्रकृति के नियामक तत्व (ईश्वर तथा ब्रह्म) को उजागर करना।
(3) मनुष्य की आन्तरिक क्षमता का विकास करना।

— शिक्षा, दर्शन मे सम्बन्ध —

दर्शन विचार व सैद्धान्तिक है,
शिक्षा व्यवहार मूलक है।

दर्शन सिद्धान्त को प्रकट करता है। तो शिक्षा उसे व्यवहारिक रूप देकर आगे अधिगम कर्ता तक पहुँचाती है।

रॉस महोदय — शिक्षा व दर्शन एक ही सिक्के के दो पहलू है।

एडम्स ⇒ शिक्षा दर्शन का गत्यात्मक पहलू है।

⇒ प्लेटो, सुकरात, जॉन लॉक, अरस्तू कमेनियस, रूसो, फ्रावेल, डी०वी० अरविन्दो, गांधी, टैगोर

पहले दार्शनिक थे बाद मे शिक्षा शास्त्री बने।

Scanned with CamScanner